ईश्वरः=परमेश्वर; **सर्वभूतानाम्**=सब जीवों के; **हृद्देशे**=हृदय में; **अर्जुन**=हे अर्जुन; **तिष्ठति**=बैठा है; **भ्रामयन्**=भ्रमाता हुआ; **सर्वभूतानि**=सब प्राणियों को; **यन्त्र आरूढानि**=देहरूपी यन्त्र में आरूढ़; **मायया**=माया के द्वारा।

अनुवाद

हे अर्जुन! परमेश्वर प्राणीमात्र के हृदय में बैठा है। वही देहरूपी यन्त्र में आरूढ़ सब जीवों को अपनी मायाशक्ति से घूमा रहा है।।६१।।

तात्पर्य

अर्जुन परम विज्ञाता नहीं था; युद्ध के सम्बन्ध में उसका निर्णय उसके अल्प विवेक तक सीमित था। भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने उपदेश में कहा है कि जीवात्मा ही सब कुछ नहीं है। श्रीकृष्ण स्वयं एकदेशीय परमात्मारूप में हृदय में बैठे हुए जीव का निर्देश करते हैं। देहान्तर के साथ जीव को अपने पूर्वकर्मों की विस्मृति हो जाती है; परन्तु सर्वज्ञ परमात्मा सदा उसके सम्पूर्ण कर्मों का साक्षी बना रहता है। यही परमात्मा जीवों को कर्म में प्रवृत्त करता है। जीवात्मा को यथायोग्य पदार्थों की प्राप्ति होती है और वह परमात्मा की अंध्यक्षता में माया द्वारा निर्मित शरीर में आरूढ़ रहता है। जैसे ही उसे कोई देह मिलती है, उसे देह के गुणों के आधीन कर्म करना पड़ता है। तीव्र वाहन में बैठा व्यक्ति दूसरे मन्द वाहन में सवार से जल्दी जाता है, चाहे जीवरूप चालक एक जैसे हों। परमात्मा की आज्ञा से मायाशक्ति पूर्व कर्मवासना के अनुसार प्रत्येक जीव के लिए उपयुक्त देह की रचना करती है। अस्तु, जीव स्वतन्त्र नहीं है। यह सोचना बिल्कुल मिथ्या होगा कि वह श्रीभगवान् से स्वतन्त्र है। वास्तव में वह सदा उनके आधीन है; अतः उसका कर्तव्य है कि उनकी शरण हो जाय—अगले श्लोक में यह स्पष्ट आज्ञा है।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।।६२।।

तम्=उसी की; **एव**=निःसन्देह; **शरणम्**=शरण में; **गच्छ**=जा; **सर्वभावेन**=सब प्रकार से; **भारत**=हे अर्जुन; **तत्**=उसकी; **प्रसादात्**=कृपा से; **पराम्**=दिव्य; **शान्तिम्**=शान्ति को; **स्थानम्**=धाम को; **प्राप्स्यसि**=प्राप्त हो जायगी; **शाश्वतम्**=सनातन।

अनुवाद

हे अर्जुन! सब प्रकार से उसी परमेश्वर की शरण में जा। उसकी कृपा से तू परम शान्ति और सनातन परम धाम को प्राप्त हो जायगा।।६२।।

तात्पर्य

जीव को प्राणीमात्र के अन्तर्यामी श्रीभगवान् की शरण में जाना चाहिए; इससे भवरोग के सम्पूर्ण दुःखों से उसका उद्धार हो जायगा। यही नहीं, शरणागति के प्रताप से अन्त में उसे श्रीभगवान् की प्राप्ति भी होगी। वैदिक शास्त्रों में दिव्य वैकुण्ठ-जगत्